1 लाख 73 हजार लोगों ने खुले में शौच की प्रथा को अलविदा किया

खुले में शौचमुक्त ब्लॉक छुरिया

धरती के इस हिस्से के लोगों ने स्वच्छता के लिए जो काम किया है उससे छत्तीसगढ़ राज्य में गांवों को खुले में शौचमुक्त करने की प्रेरणा मिली है। महिलाओं के सम्मान एवं बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा में शौचालय का महत्व समझते हुए छुरिया विकासखंड के 115 ग्राम पंचायत के 223 गांवों के 1 लाख 73 हजार 997 लोगों ने खुले में शौच की प्रथा को अलविदा कह दिया है। इस विकासखंड में अनुसूचित जाति के 13760 एवं अनूसूचित जनजाति के 75589 लोग निवास करते ह। **स्वच्छता कांति यात्रा छुरिया** का नाम देकर **जनआंदोलन** का प्रारम्भ किया गया।

छुरिया विकासखंड का रानामटिया गांव खुले में शौचमुक्त होने वाला राजनांदगांव का पहला ओडीएफ गांव है।रानामटिया ग्राम में चारों तरफ खुली जगह होने के बावजूद ग्रामीणों ने जलजनित बीमारियों से बचाव महिलाओं के मान–सम्मान, बुजुर्गो की सुविधा एवं नई पीढ़ी की शौच संबंधी आदत में बदलाव के लिए लोगो ने अपने घरों में शौचालय का निर्माण कराया है। छुरिया विकासखंड में जंगलों के बीच बसे ग्राम बावली के सभी 57 घरों में ग्रामीणों द्वारा स्वयं के खर्चे पर शौचालय का निर्माण कराया गया है। यहां शादी–ब्याह एवं अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों में बाहर से आने वाले सगे–संबंधियों के लिये भी समुदाय ने शौचालय का निर्माण किया गया है। ग्राम बावली की श्रीमति सरस्वती बाई ने बताया कि शौच के लिये दूर तक जाना, झाड़ियों की ओट को ढूंढना एवं रास्ते मे पुरूषों के आवाजाही पर बार–बार खड़ा होना। इन समस्याओं से रोज होकर गुजरना पड़ता था। शौचालय अपने घर में निर्माण करने से इन समस्याओं से निजात मिल गयी है।

विकासखंड छुरिया को खले में शौचमुक्त करने के लिए 7 कलस्टर में विभाजित किया गया। प्रत्येक कलस्टर में ग्रामीणों को प्रेरित करने मैदानी शासकीय अमले को **समुदाय संचालित संपूर्ण स्वच्छता प्रविधि** पर तैयार किया गया। छुरिया विकासखंड में बदलाव लाकर खुले में शौचमुक्त बनाने में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की अहम भूमिका रही है। प्रत्येक ग्राम पंचायतों में **भारत माता वाहिनी सेना** का गठन किया गया। भारत माता वाहिनी की महिलाएं लोगों को प्रेरित करने के साथ मानिटरिंग का भी कार्य संपादित करती थी। अभियान के दौरान लोगों को जोड़ने **अपनी इंट अपनी शीट, तभी होगी हमारी जीत** का नारा चला। गांव के राजमिस्त्री को लेकर ग्रामीण अपने घरों में शौचालय बनाने के लिए जुट गये। ईंट भट्ठा वाले भी लागत मूल्य पर ईंट देने को तैयार हो गये एवं प्रति हजार बाजार मूल्य 3500रू. को कम कर 2500रू. में ईट उपलब्ध कराया। स्थानीय ग्रामीण जिनके पास मालवाहक थे वे मात्र डीजल खर्च पर रेत लाने को तैयार हो गये।

छुरिया विकासखंड के गांवों को खुले में शौचमुक्त करने में ग्राम स्तर पर पंचायती राज पदाधिकारियों एवं वहां पदस्थ शासकीय अमले की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गांवा को खुले में शौचमुक्त करने के काम में सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक, पंच, मध्यान्ह भोजन पकाने वाली महिलाओं, कोटवार, पटेल, प्रेरक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, समुहह की महिलाओ, मितानीनों ने भी बढ़चढ़ कर योगदान दिया। गांवों में स्वच्छता का वातावरण निर्मित करने के लिए **बाल स्वच्छता सेना एवं नौ–रत्न समूह** का योगदान अतुल्य है। छुरिया के लोगो ने खुले में शौच की प्रथा से मुक्ति पाने के लिए प्रत्येक ग्राम में कम से कम **44 लोगो की स्वच्छता सैनिकों** की टीम तैयार की। इनके सहयोग से खुले में शौच को बंद करने के लिए लोग प्रेरित हुए। आज छुरिया विकासखण्ड के समस्त ग्राम के लोग खुले में शौच न करने हेतु संकल्पित है।